International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 966-969

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 966-969
www.allresearchjournal.com
Received: 28-11-2015
Accepted: 30-12-2015

डॉ. ममता
एसोसिएट प्रोफेसर,
भीमराव अम्बेडकर कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. ममता
एसोसिएट प्रोफेसर,
भीमराव अम्बेडकर कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

'आषाढ़ का एक दिन' : स्त्री संघर्ष का दस्तावेज

डॉ. ममता

सार : मोहन राकेश का सन् 1958 में प्रकाशित 'आषाढ़ का एक दिन' उनका सबसे उत्कृष्ट नाटक कहा जा सकता है। आलोच्य नाटक में कवि कालिदास का ऐतिहासिक पात्र कहीं न कहीं स्वयं नाटककार मोहन राकेश की प्रतिच्छाया का आभास कराता है। ऐतिहासिक कथानक पर आधारित यह नाटक हिंदी के सबसे ज्यादा शिक्षण-संस्थानों में पढ़ाए जाने वाला और रंगमंच पर खेला जाने वाला नाटक है। आलोच्य नाटक में प्रेम-विषयक भारतीय अवधारणा का विशद् चित्रण है। आज भी हमारे समाज में पुरुष के यौनिक अपराधों या कृत्यों को अपरिहार्य मानते हुए सामाजिक स्वीकार्यता दे की जाती है जबकि स्त्रियों में यौन-शुचिता की अपेक्षा की जाती है। नाटक में स्त्री-पुरुष के प्रति इस दोहरे मानदंड को भी रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। यह नाटक स्त्री-पुरुष संबंधों के करूण यथार्थ का जीवन्त दस्तावेज है।

बीज शब्द : स्त्री-पुरुष संबंध, पुरुषवादी सोच, प्रेम की भारतीय अवधारणा, यौन शुचिता, पितृसत्तात्मक समाज

प्रस्तावना :

'आषाढ़ का एक दिन', नाटक स्त्रीवादी चिंतन पर केन्द्रित नाटक है। यूं तो इस नाटक का नायक कालिदास है, जो अपने ग्राम-प्रान्तर में कवि-कर्म करते हुए जीवनयापन कर रहा था लेकिन इस नाटक की केन्द्रीय पात्र मल्लिका है। मल्लिका कालिदास की प्रेमिका है। स्वाभिमानी मल्लिका के चरित्र में अल्हड़ता और गांभीर्य का अद्भुत सम्मिलन है। मल्लिका के जीवन में आषाढ ऋतु की वर्षा के प्रतीकात्मक अर्थ है। आलोच्य नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक का नामकरण कालिदास के नाटक 'मेघदूत' की प्रथम पंक्ति 'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे' से प्रेरित होकर किया गया है। जैसे आषाढ़ ऋतु की वर्षा में नदियाँ उफनती है, वैसे ही कालिदास के प्रेम में डूबी मल्लिका भी लोक समाज के नैतिक बन्धनों को दरकिनार कर कालिदास के साथ आषाढ़ की प्रथम वर्षा का आनन्द लेती है। आषाढ़ की वर्षा और वायु भाँति वह भी समस्त सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ती हुई उल्लास और प्रेम में डूबकर वर्षा में भीगती है। माल्लिका की माँ अंबिका को कालिदास फूटी आँख नहीं सुहाता। वह अग्निमित्र को अपनी बेटी के विवाह हेतु कही प्रस्ताव देकर भेजती है, किंतु कालिदास

के साथ उसके प्रेम-संबंध की बदनामी, विवाह प्रस्ताव में बाधक बनती है। मल्लिका माँ की विवाह कराने की उत्कंठा का विरोध करती है। वह कहती है - "मल्लिका का जीवन उसकी अपनी सम्पत्ति है। वह उसे नष्ट करना चाहती है तो किसी को उस पर आलोचना करने का क्या अधिकार है?"[1]

उज्जयिनी के कुछ दरबारी कालिदास के लिए सम्राट विक्रमादित्य के दरबार में उज्जयिनी चलने का प्रस्ताव लेकर आते है। कालिदास ग्राम-प्रान्तर छोड़कर उज्जयिनी नहीं जाना चाहता। कालिदास द्वारा राज्याश्रय के प्रस्ताव का अस्वीकार करना अंबिका को कालिदास का ढ़ोग लगता है। अंबिका मातुल से कहती है - "सम्मान प्राप्त होने पर सम्मान के प्रति प्रकट की गयी उदासीनता व्यक्ति के महत्व को बढ़ा देती है। तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए कि तुम्हारा भागिनेय लोकनीति में भी निष्णात है।"[2]

कालिदास के अतिरिक्त किसी अन्य को अपने जीवन में स्थान देना मल्लिका को स्वीकार्य नहीं। कालिदास की प्रतिभा को सम्मान दिलाने और उसकी सफलता हेतु उज्जयिनी का राज्याश्रय स्वीकार करने के लिए वह कालिदास को मनाती भी है। कालिदास के उज्जयिनी जाने के बाद भी मल्लिका का कालिदास के प्रति प्रेम कम नहीं हुआ। मल्लिका के समर्पित प्रेम में पाने की कामना नहीं है। कालिदास उज्जयिनी जाकर कालिदास से मातृगुप्त बन जाते है। यही नहीं गुप्त वंश की दुहिता प्रियंगुमंजरी से विवाह कर कश्मीर राज्य के शासक भी बन जाते है। रचनाकर्म के साथ-साथ कालिदास का जीवन विलासिता में डूबने लगा। एक ओर जहाँ कालिदास का समय वारांगणाओं के सहवास में व्यतीत'[3] होने लगा। वहीं मल्लिका आर्थिक अभावों में जूझते हुए भी उज्जयिनी की ओर जाने वाले व्यापारियों से लौटते समय कालिदास की नवीनतम रचनाओं को पढ़ने के मँगवाती रही। कालिदास की रचनाओं को अपने वक्ष से लगाना मल्लिका के कालिदास के प्रति भावनात्मक लगाव के साथ-साथ उसकी अकुलाहट, अकेलेपन और अन्तर्द्वन्द्व का दर्शाता है।

नाटककार ने मल्लिका के जीवन की त्रासदी को दर्शाने के लिए कहीं भी भावुकता से भरा अतिरंजित चित्रण नहीं किया है। उसकी आत्मपीड़न की यातना वर्तमान युग की मानिनी स्त्री की यातना प्रतीत होती है। दूसरे अंक में कालिदास का ग्राम प्रान्तर में आकर भी मल्लिका से बिना मिले ही चले जाना, मल्लिका को तोड़ सा देता है। कहीं न कहीं उसका अन्तस यह जान चुका था कि जिसे उसने टूटकर चाहा, वह आत्मसीमित, दुर्बल और पलायनवादी है। अंबिका और विलोम को कालिदास के बारे भला-बुरा कहने से रोकने वाली मल्लिका भीतर ही भीतर कालिदास की उपेक्षा से व्यथित दिखती है।

नाटक में अंबिका के संघर्ष भी कुछ कम नहीं है। उसके जीवन में गरीबी और वैधव्य के कष्ट झेलने के साथ ही युवा पुत्री के भविष्य को सँवारने का बड़ा दायित्व भी है। वह अपनी पुत्री से बेहद प्यार करती है और अपनी पुत्री की हितैषी होने के कारण कई बार उससे कड़वा भी बोल जाती है। मल्लिका का कालिदास के प्रेम में पड़कर समाज में बदनाम होना किसी भी माँ की भाँति उसे भी स्वीकार्य नहीं था। उसकी अनुभवी आँखें कालिदास के चरित्र को बहुत पहले ही जान जाती है। वह मल्लिका से कालिदास के बारे में कहती है - वह व्यक्ति आत्मसीमित है। संसार में अपने सिवा उसे और किसी से मोह नहीं है।[4] अंबिका एक व्यवहारिक स्त्री है। वह कल्पनालोक में विचरण करने वाली अपनी पुत्री से ठीक उलट कठोर यथार्थ में जीवनयापन करने वाली कर्मठ स्त्री है। एक आदर्श माँ की भूमिका निभाते हुए वह अपनी बेटी को जीवन की कड़वी सच्चाईयों से अवगत कराने का प्रयास करती है। वह मल्लिका से कहती है - मैं पूछती हूँ भावना में भावना का वरण क्या होता है? उससे जीवन की आवश्यकताएँ किस तरह पूरी होती है?[5] मृत्युपर्यन्त वह बहुत कोशिश करती हैं कि उसकी पुत्री मल्लिका के जीवन को संवार दें लेकिन सफल नहीं हो पाती। कालिदास की पत्नी प्रियंगुमंजरी के द्वारा मल्लिका को किसी राज अधिकारी से विवाह करने का प्रस्ताव देना उसको एक बार फिर आहत करता है। अपनी बेटी को इस तरह अपमानित होता देख वह बिलबिला जाती है और हर बार की तरह इस बार भी कोरी भावुकता में जीने वाली मल्लिका पर क्रोधित होती है - 'लो 'मेघदूत' की पंक्तियाँ पढ़ो। इन्हीं में न कहती थी उसके अन्तर की कोमलता साकार हो उठी है? आज इस कोमलता का और भी साकार रूप देख लिया?"[6] अंबिका की नजर में मल्लिका के जीवन के समस्त कष्टों की एकमात्र वजह कालिदास है। जिस प्रकार

मल्लिका के जीवन की धुरी कालिदास है, ठीक वैसे अंबिका के जीवन का केन्द्र मल्लिका है। अपनी बेटी के दर्द और आँसुओं को गहराई से महसूस करती है नाटक में मल्लिका और अंबिका के अतिरिक्त एक अन्य महत्वपूर्ण स्त्री पात्र, प्रियंगुमंजरी है। प्रियंगुमंजरी कवि कालिदास की पत्नी है। प्रियंगुमंजरी कालिदास और मल्लिका के प्रेम-संबंधों के बारे में जानती है। अतः पति की प्रेयसी के प्रति ईर्ष्या और जलन का भाव दिखना स्वाभाविक है। प्रियंगुमंजरी के ग्राम प्रान्तर में आने और वहाँ विचरण करने में ग्राम-प्रान्तर से ज्यादा मल्लिका को देखने की उत्कंठा दिखती है। वह मल्लिका को अपने साथ चलने तथा उसके पुराने जर्जर हो चुके घर का पुनर्निर्माण कराने की पेशकश करती है। स्वाभिमानी मल्लिका उसके इस आग्रह को सिरे से नकार देती है। मल्लिका से बात करते हुए प्रियंगुमंजरी कई बार उसे 'विदग्ध भाव' से देखती है। मल्लिका का अविवाहित होना प्रियंगुमंजरी में असुरक्षा का भाव पैदा करता है। मल्लिका का विवाह राज्य के किसी राज अधिकारी से कराकर सम्भवतः प्रियंगुमंजरी अपने असुरक्षा-बोध को समाप्त करना चाहती है। स्वाभिमानी मल्लिका को प्रियंगुमंजरी का यह 'उपकार' भी अस्वीकार्य है। वह प्रियंगुमंजरी द्वारा भिजवाई गई स्वर्ण मुद्राएँ और वस्त्र भी वापिस भिजवा देती है। वस्तुतः मूल्यों की धरोहर और मानवीय विश्वास के प्रति प्रतिबद्ध मल्लिका जहाँ क्षणों की अनुभूतियों में जीवन की सम्पूर्णता को तलाशती है, वहीं प्रियंगुमंजरी सम्पूर्णता में भी महानगरीय आधुनिकता बोध की क्रोड से उपजे अकेलेपन, कुंठा और अधूरेपन को भोगने के लिए अभिशाप्त है।

नाटक के आरम्भ में आषाढ़ की पहली बारिश में भीगी हर्ष और उल्लास से भरी मल्लिका नाटक के अंत तक आते आते अंबिका की प्रतिकृति लगने लगती है। अंबिका के देहावसान के बाद भी यह स्थिति यथावत् बनी रहती है। समय का पहिया निरन्तर चलता है लेकिन स्थितियाँ वही की वही है। कल जहाँ अंबिका थी, वहाँ आज मल्लिका है। वह अपनी बच्ची की देखभाल वैसे ही कर रही है जैसे कभी उसकी देखभाल अंबिका किया करती थी। 'भावना में भावना का वरण' करने वाली मल्लिका 'अभाव की संतान' की माँ है। वह कहती है -

''यह मल्लिका है जो धीरे-धीरे बड़ी हो रही हैं और माँ के स्थान पर अब मैं इसकी देखभाल करती हूँ। ..... यह मेरे अभाव की सन्तान है। जो भाव तुम थे, वह दूसरा नहीं हो सका, ...।''[7]

मल्लिका के संलाप में उसकी अथाह पीड़ा झलक रही है। दरअसल मल्लिका ने अपनी बच्ची को अभाव की संतान इसलिए कहा क्योंकि इस सन्तानोत्पत्ति में भावना या कहें कि रागात्मकता का अभाव था। प्रेम तो उसने सिर्फ कालिदास से ही किया था। कुछ आलोचक नाटक के तीसरे अंक में नशे में धुत्त विलोम के मल्लिका के घर आने का अर्थ मल्लिका के पति होने के रूप में लगाते है लेकिन मल्लिका का एकालाप इस ओर संकेत करता है कि स्थितियों ने मल्लिका को देहवृत्ति की ओर धकेल दिया। इस संदर्भ में मल्लिका का कथन दृष्टव्य है -

''अभाव के कोष्ठ में किसी दूसरे की जाने कितनी-कितनी आकृतियाँ है। जानते हो मैंने अपना नाम खोकर विशेषण उपार्जित किया है और अब मैं अपनी दृष्टि में नाम नहीं केवल विशेषण हूँ।''[8] मल्लिका यह कथन कि 'नाम नहीं केवल विशेषण हूँ' - इस बात की पुष्टि करता हैं कि परिस्थितिवश वह देहवृत्ति के घिनौने कर्म को अपनाने के लिए विवश हुई। मातुल से मल्लिका को कालिदास के काशी जाकर सन्यास लेने की सूचना मिलती है, तब उसका रहा सहा धैर्य भी जवाब दे जाता है। संभवतः आज भी दिल के किसी कोने में कालिदास के आने की प्रतीक्षा थी उसे। तीसरे अंक में मल्लिका के एकालाप में उसके जीवन की पीड़ा और आँसूओं का सैलाब-सा दिखाई देता है। भाग्य की विडंबना यह है कि जिस प्रेम के लिए उसने अपना सर्वस्व दाँव पर लगा दिया, वह मल्लिका के पास अपना जीवन शुरू से शुरू करने के उद्देश्य आता तो है लेकिन मल्लिका के जीवन में आए बदलाव (मल्लिका की संतान) को स्वीकार नहीं कर पाता। वह स्वयं निजी जीवन में प्रिंयगुमंजरी से विवाह कर चुका था। इतना ही नहीं उसके बारे में उज्जयिनी में बहुत सा समय वारांगनाओं के सहवास में व्यतीत'[9] होने की खबरें भी ग्राम-प्रान्तर में सुनने को मिली। कालिदास अपनी प्रेयसी मल्लिका के साथ जीवन की नई शुरूआत करने आया था, जिसे बरसों पहले वह छोड़कर गया हैं। मल्लिका का 'मातृत्व' उसकी पुरुषवादी सोच को खटक रहा था। स्वंय वारांगनाओं के साथ

सहवास करके भी मल्लिका से यौनशुचिता की अपेक्षा करना, उसकी पितृसत्तात्मक सोच का परिचायक है। कालिदास मल्लिका से कौमार्य की अक्षुण्णता की अपेक्षा रखता था।

निष्कर्ष :

आलोच्य नाटक के स्त्री पात्र विशेषकर मल्लिका और अंबिका संघर्षशील पात्र है। एक ओर जहाँ ये जीवन की जटिलताओं और मानसिक संघर्षो से जूझते है वहीं दूसरी ओर मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध दिखते है। माँ और बेटी की ये जोड़ी अपने अभावग्रस्त जीवन में भी सार्थकता तलाशने के लिए कृतसंकल्प दिखती है। नाटक के शुरू से अंत तक मल्लिका की प्रेमजनित पीड़ा में अनास्था का स्वर नहीं उभरा। सच तो यह है कि वह मन को मारकर भावशून्य हो विरक्त भाव से जीवन जीने की कला सीख गई। उसकी अभावयुक्त जीवन में भी स्वाभिमान के साथ जीने चाहत अंबिका के देहावसान के बाद अधूरी-सी रह जाती है। आर्थिक स्वावलंबन के अभाव में मल्लिका को स्थितियों के आगे समर्पण करना पड़ता है। मल्लिका की भाँति अंबिका भी जीवन के झंझावातों से जूझने वाली जीवट स्त्री है। वह एक आदर्श ममतामयी माँ है, जो ऊपर से भले ही कठोर दिखती है लेकिन जीवनपर्यन्त अपनी बेटी का भावनात्मक संबल बन रही। कुल मिलाकर नाटककार मोहन राकेश ने 'आषाढ का एक दिन' नाटक के माध्यम से सत्ता और राज्याश्रय के प्रश्नों के साथ-साथ स्त्री मनःस्थितियों को बड़ी खूबसूरती से शब्दचित्र के कैनवास पर उकेरने का सफल प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. 'आषाढ़ का एक दिन' / मोहन राकेश / पृ.स. 12 / राजपाल प्रकाशन / संस्करण 2003
2. 'आषाढ़ का एक दिन' / मोहन राकेश / पृ. 27.
3. वही / पृ. 94.
4. वही / पृ. 23.
5. वही / पृ. 14.
6. वही / पृ. 77.
7. वही / पृ. 93.
8. वही / पृ. 93.
9. वही / पृ. 94.